27 पुर्तगाली भाषा का परिचय

● श्री शिव कुमार सिंह

पुर्तगाली भाषा बगैर किसी बड़े प्रचार के धीरे-धीरे पूरी दुनिया में अपना स्थान बना रही है। आज पुर्तगाली बोलने वालों की संख्या तकरीबन 20 करोड़ के आस-पास है और वर्तमान समय में पुर्तगाली भाषा दुनिया की छठी सबसे ज़्यादा बोली जानेवाली भाषा बन चुकी है। साथ ही यह पुर्तगाल, अंगोला, काबु-वेर्द, गिने-बिसाउ, पूर्वी तिमोर, ब्राज़ील, मकाउ (चीन), मोज़ाम्बिक, साऊँ तूमे और प्रिंसिप आदि देशों की राष्ट्रीय भाषा भी है। भाषाविज्ञान के स्तर पर यूरोप (पुर्तगाल) की पुर्तगाली, दक्षिण अमेरिका (ब्राज़ील) की पुर्तगाली और अफ़्रीका (अंगोला, काबु-वेर्द, गिने-बिसाउ, मोज़ाम्बिक, साऊँ तूमे और प्रिंसिप) आदि की पुर्तगाली में थोड़ा-बहुत अंतर है लेकिन जब भी किसी भाषा का भौगोलिक रूप इतना व्यापक हो जाता है तो एक ही भाषा के अंदर भौगोलिक बदलावों के साथ भाषाई बदलाव भी होते रहते हैं। जैसे भारत में ही बिहार की हिंदी और राजस्थान की हिंदी में बहुत ज़्यादा तो नहीं लेकिन कुछ बदलाव तो स्पष्ट रूप से चिह्नित होते ही हैं।

पुर्तगाली भाषा बोलनेवाले लोग अफ़्रीका, एशिया, उत्तर अमेरिका, दक्षिण अमेरिका और यूरोप महादेशों में पाए जाते हैं जैसा कि मानचित्र में इंगित है। आश्चर्य देखिए कि भाषा का मूल जहाँ से शुरू हुआ, पुर्तगाल, वहाँ इसको बोलने वालों की संख्या मात्र 1 करोड़ है और ब्राज़ील जो 1820 तक पुर्तगाल का एक उपनिवेश था वहाँ आज तकरीबन 18 करोड़ लोग पुर्तगाली भाषी हैं। 17वीं से लेकर 18वीं शताब्दी तक तो किसी ने सोचा भी नहीं होगा कि पुर्तगाली, स्पेनी और अंग्रेज़ी जैसी भाषाएँ एक दिन विश्व भाषाएँ बनने की ओर अग्रसर हो सकती हैं। निस्संदेह इसमें उपनिवेशीकरण की भूमिका बहुत प्रमुख रही है।

1961 से पहले गोवा चूँकि पुर्तगाली उपनिवेश था, अत: 1961 तक वहाँ की आधिकारिक भाषा भी पुर्तगाली थी लेकिन आज भी गोवा, दमन और दीव में थोड़ी बहुत पुर्तगाली बोली जाती है।

• पीएचडी (जारी)

• हिंदी के व्याख्याता साहित्य विभाग लिस्बन विश्वविद्यालय

• वय्यादोलिद विश्वविद्यालय, स्पेन (Valladolid University, Spain) में यूरोपीय हिंदी सम्मेलन (15-17 मार्च, 2012) में व्याख्यान : 'हिंदी को विदेशी भाषा के रूप में पढ़ाना : एक परिप्रेक्ष्य' (Teaching Hindi as Foreign Language: Perspective)।

• FLUL, पुर्तगाल में 'भारतीय लेखन प्रणाली' पर प्रस्तुति

• लिस्बन में भारतीय दूतावास, पुर्तगाल एवं लिस्बन विश्वविद्यालय के साहित्य विभाग के सहयोग से विश्व हिंदी दिवस 2011, 2012 और 2013 का आयोजन किया।

• आपने दिल्ली विश्वविद्यालय और पुर्तगाली सांस्कृतिक केंद्र/इंस्टीट्यूट Camões, नई दिल्ली के सहयोग से एक नाटक में भाग लिया जिसका शीर्षक : 'एक अज्ञात द्वीप की कथा' है।

• आप नई दिल्ली, भारत में पुर्तगाली दूतावास के सरकारी वेबसाइट के अनुवादक हैं।

• आप पुर्तगाली और अंग्रेज़ी भाषा को हिंदी भाषा में अनूदित करते हैं।

पुर्तगाल का परिचय

पुर्तगाली गणराज्य यूरोप के दक्षिण-पश्चिम में स्थित है और साथ ही स्पेन के साथ आइबेरियन प्रायद्वीप बनाता है। 1128 में राजा दों अफोंसू एन्रिक्श ने पुर्तगाल की एक स्वतंत्र राज्य के रूप में स्थापना की। इसकी राजधानी लिस्बन में स्थित है। दुनिया के सबसे पुराने विश्वविद्यालयों में से एक कोइमब्रा विश्वविद्यालय की स्थापना 1288 में हुई। पुर्तगाल अपनी स्थापना से लेकर 1910 तक राजतंत्र रहा और तदोपरांत पुर्तगाल एक प्रजातंत्र बना। हालाँकि 1928-1974 के बीच पुर्तगाल तानाशाही का शिकार रहा, 25 अप्रैल, 1974 को यहाँ फिर से प्रजातंत्र स्थापित हुआ।

पंद्रहवीं शताब्दी की शुरुआत में यूरोपीय समुद्री खोज काल के महान लेखकों में से एक लुईश कामोऐश का जन्म भी इसी देश में हुआ और उन्होंने 'उश लुजियदश' नामक महान पौराणिक पुर्तगाली ग्रंथ की रचना की जिसमें मुख्य रूप से 'वास्को द गामा' की भारत के लिए समुद्री मार्ग की खोज के दौरान रास्ते में आई कठिनाइयों और उनसे जूझने की घटनाओं का विवरण है।

15वीं शताब्दी के बाद से आज तक पुर्तगाली साहित्य में भारत

या भारतीय संदर्भ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मौजूद रहे हैं। उदाहरणार्थ महान पुर्तगाली समकालीन लेखक स्व. जोज़े सरामागो सरामागू (1922–2010, अजियागा) जिन्हें 1998 में साहित्य का नोबेल पुरस्कार दिया गया। उन्होंने भी 'ले वुआयाज़ दे लेलेफ़ाँ 2008 (हाथी की यात्रा)' लिखी और इसमें कहानी का एक पात्र भारतीय मूल का है।

पुर्तगाल में भारत/भारतीय संस्कृति

पुर्तगाल में मूलत: भारत से संबंधित गुजराती और पंजाबी समुदाय के बहुत लोग हैं। गुजराती समाज में ज़्यादातर वे लोग हैं जो सालों पहले भारत से मोज़ाम्बिक गए और अन्य अफ्रीकी देशों में मूलत: व्यापार आदि के लिए बस गए थे। जब 1974 में मोज़ाम्बिक पुर्तगाल की दासता से स्वतंत्र हुआ तो अचानक वहाँ गृहयुद्ध के जैसे हालात पैदा हो गए तो इस कारण बहुतेरे गुजराती मूल के लोगों ने पुर्तगाल का रूख किया और यहीं बस गए। लेकिन आज भी उन्होंने अपनी संस्कृति और अपनी पहचान को बचाकर रखा हुआ है। भारतीय मूल के लोग हिंदी फ़िल्मों के माध्यम से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हिंदी तथा भारतीय संस्कृति से जुड़े हुए हैं। लिस्बन जो कि पुर्तगाल की राजधानी है, यूरोप के अन्य राजधानियों की तुलना में एक छोटा शहर है लेकिन पूरा शहर विभिन्न संस्कृतियों का समागम नज़र आता है। एक छोटा शहर होने के बावजूद यहाँ 4–5 हिंद मंदिर, 2–3 मसजिदें, 2 गुरुद्वारे हैं और ईसाई बहुल क्षेत्र होने की वजह से गिरजाघरों की बात ही करने की ज़रूरत नहीं।

पुर्तगाल और भारत के 500 सालों का साझा इतिहास है। 1961 तक गोवा विधिवत रूप से पुर्तगाल का ही हिस्सा था इसीलिए तो भारत से गोवा से जुड़ी यादें आज भी पुर्तगालियों की यादों में बसी हैं। बहुत से पुर्तगाली लोग जो भारतीय मूल के हैं अपने बच्चों को गुजराती, कोंकणी, हिंदी सिखाने की कोशिश करते हैं। बहुतेरे पुर्तगाली युवा लोग हिंदी या अन्य भारतीय भाषाएँ सीखना चाहते हैं क्योंकि अभी भी उनके बहुत सारे रिश्तेदार भारत में हैं और साल-दो साल में उनका भारत जाना होता है। बहुत लोग अभी भी शादी वगैरह के लिए भारतीय लड़कियाँ ही चाहते हैं तो उपरोक्त तथ्य खासकर पुर्तगाल में इस बात को दर्शाते हैं कि यहाँ की युवा पीढ़ी भारतीय संस्कृति एवं भाषाओं के बारे में अगर बहुत ज़्यादा नहीं तो कुछ जानकारी तो ज़रूर रखती है।

पुर्तगाल में हिंदी और भारतीय अध्ययन का इतिहास

पुर्तगाल में विश्वविद्यालय के स्तर पर भारतीय संस्कृति की शिक्षा-दीक्षा की शुरुआत का आधिकारिक श्रेय आदरणीय प्रो. जोज़े लैड़त दे वास्कोनसेलोस (Jose Leite de Vasconcelos) (उकान्या, 07–07–1858, लिस्बन, 17–5–1941) जो कि लिस्बन विश्वविद्यालय के कला संकाय में प्रोफेसर भी रहे। वे न सिर्फ़ पुर्तगाल में वरन् पूरे यूरोप में पूरब (एशिया) की भाषा और संस्कृति के बारे में शोध करने वाले गिने-चुने विद्वानों में से एक हैं। उनकी मृत्यु के बाद लगभग 8 हज़ार किताबें लिस्बन विश्वविद्यालय के कला संकाय के पुस्तकालय को भेंट कर दी गईं जिनमें हज़ारों किताबें संस्कृत और भारतीय अध्ययन से संबंधित हैं।

लिस्बन विश्वविद्यालय के कला संकाय में हिंदी

लिस्बन विश्वविद्यालय के कला संकाय में एशियाई अध्ययन में 2008 से स्नातक और 2012 से स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की शुरुआत हुई है तथा इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत हिंदी अन्य एशियाई भाषाओं के साथ एक विषय है और हर साल तकरीबन 15–20 नए छात्र हिंदी विषय को चुनते हैं। इस समय कला संकाय में हिंदी के कुल 30 छात्र हैं।

लिस्बन विश्वविद्यालय के कला संकाय के भाषा विभाग में पुर्तगाली भाषा के पठन-पाठन और शोध के अलावा बहुत सारी विदेशी भाषाओं के अध्ययन-अध्यापन की समुचित व्यवस्था है। इस विभाग के अंतर्गत हिंदी के अलावा कई एशियाई भाषाएँ जैसे अरबी, चीनी, जापानी, तुर्की, फ़ारसी आदि पढ़ाई जाती हैं। हिंदी की शिक्षा शैक्षणिक सत्र 2008–09 से लगातार चल रही है। अभी तक भारतीय दूतावास के सहयोग से भारत सरकार की छात्रवृत्ति पर 6 छात्र केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा में हिंदी पढ़ने के लिए जा चुके हैं।

पुर्तगाल में हिंदी के पठन-पाठन की प्रमुख प्रेरणाएँ–

- भारत का विश्व बाज़ार में आर्थिक शक्ति के रूप में उदय,
- भारतीय भाषाओं एवं संस्कृतियों का आदान-प्रदान,
- योग और भारतीय दर्शन के प्रति आकर्षण,
- भारतीय शास्त्रीय कलाएँ (नृत्य, संगीत और गायन) और भारतीय फ़िल्में,
- अनुवाद सेवा और आयात-निर्यात

विदेशी भाषा के रूप में अन्य एशियाई भाषाओं जैसे चीनी, जापानी, कोरियाई आदि की अपेक्षा हिंदी सीखने वालों की संख्या कम होने का प्रमुख कारण व्यावसायिक प्रेरणा की मौजूदगी का नदारद होना है। साथ ही हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए हिंदी को सिर्फ़ संसाधनों की ही नहीं वरन् संस्थागत सहयोग की भी नितांत आवश्यकता और अपेक्षा है। जब भी भारतीय संस्थानों के प्रतिनिधियों को अवसर मिले तो यथासंभव देश के अंदर और भारत के बाहर, विदेशों में सामाजिक एवं राजनयिक मंचों पर हिंदी का प्रयोग अवश्य किया जाए। अगर पूर्णत: संभव न हो तो आंशिक रूप से ही सही इन मंचों पर हिंदी का प्रयोग दर्शाया जाए और इस संदर्भ में यूरोप के देशों से सीख ली जा सकती है जहाँ लगभग सभी देश सामाजिक और राजनयिक मंचों पर सदैव अपनी भाषा का प्रयोग करते हैं।

हिंदी-पुर्तगाली : एक दृश्य (शब्दावली)

हिंदी 800 साल पुरानी भाषा है जो संस्कृत, पाली और प्राकृत से विकसित होकर अनेक विदेशी भाषाओं के शब्दों को समेटती हुई अपने आधुनिक रूप में पहुँची है जिसमें पुर्तगाली भी शामिल है। हिंदी में पुर्तगाली मूल के कुछ शब्द—

पुर्तगाली से हिंदी में

हिंदी	पुर्तगाली	हिंदी	पुर्तगाली
अनानास	ananás	नीलाम	leilão
अलमारी	armário	पादरी	padre
आया	aia	पावरोटी	pão
कमीज़	camisa	पिस्तौल/राइफ़ल	pistola/rifle
कप्तान	capitão	फीता	fita
कनस्तर	canastro	बाल्टी	balde
कमरा	câmara	बिस्कुट	biscoito
कॉफ़ी	café	बटन	Botão
कारतूश	cartucho	मिस्त्री	mestre
गिरजाघर	igreja	मेज़	mesa
चाभी	chave	यीशू	jesus
तौलिया	toalha	साबुन	sabão

पुर्तगाली भाषा को हिंदी ने उतना प्रभावित नहीं किया है जितना पुर्तगाली ने हिंदी को लेकिन पुर्तगाली भाषा में ही हिंदी/भारतीय मूल के शब्द मौजूद हैं। जैसे—

हिंदी/भारतीय मूल से पुर्तगाली में

पुर्तगाली	हिंदी	पुर्तगाली	हिंदी
ahimsa (não-violência)	अहिंसा	sitar	सितार
karmá (dever)	कर्म	chamuça	समोसा
carril	कढ़ी	bengala	बंगाल
yogá	योग	caxemira	कश्मीरी
pagode	पगोड़ा (स्तूप)	chita	चीता
xalie	शाल		

हिंदी-पुर्तगाली व्याकरण : एक तुलनात्मक अध्ययन

हिंदी और पुर्तगाली दोनों ही भारोपीय परिवार के अंग हैं और हिंदी का जन्म संस्कृत से हुआ है तथा यह इंडो-ईरानियन शाखा के अंतर्गत इंडो-आर्यन भाषा का अंग है। पुर्तगाली का जन्म लैटिन से हुआ है और यह रोमाँस भाषा का अंग है। हिंदी की लिपि देवनागरी है जबकि पुर्तगाली रोमन लिपि में लिखी जाती है हालाँकि दोनों ही भाषाएँ बाएँ से दाएँ लिखी जाती हैं।

स्वर विज्ञान

	हिंदी	पुर्तगाली
मूल इकाई	अक्षर/शब्दांश, जैसे : श = sh[a]	Alphabet/letter, जैसे : s, h = sh = श
अक्षर	52 (39 व्यंजन, संयुक्त अक्षरों के साथ + 13 स्वर)	26 चिह्न (संयुक्त अक्षरों के बिना जिसमें 5 स्वर हैं)
स्वर	स्वतंत्र : 13	स्वतंत्र : 5 संयुक्त स्वर : 13, जैसे : ai, au, ei, eu, éu, oi, ói, ou, ui, ãe, ão, õe
अर्ध स्वर	य, व	j, w
मात्रा	12, ा, ि, ी, ु, ू, ृ, े, ै, ो, ौ, ं, ः	12 जैसे : á ã à â, í, ó, ô, ú, ü, ç
महाप्राण	हाँ (जैसे : क-अल्प्राण, ख-महाप्राण)	नहीं
मूर्धन्य	7, जैसे : ट, ठ, ड/ड़, ढ/ढ़, ण	1, जैसे : R

उच्चारण–

उच्चारण के स्तर पर हिंदी पुर्तगाली या अन्य यूरोपीय भाषाओं से आसान भाषा है क्योंकि हिंदी में प्राय: जो लिखते हैं वही पढ़ते हैं लेकिन पुर्तगाली तथा अन्य यूरोपीय भाषाओं में भिन्न संदर्भों में उच्चारण के अलग-अलग नियम हैं।

जैसे : Jorge जॉर्ज (एक नाम), Gato गातू (बिल्ली)

ऊपर दिए गए उदाहरण में 'G' पहले शब्द में 'ज' और दूसरे में 'ग' ध्वनि इंगित कर रहा है।

हिंदी में कोई भी अक्षर मूक नहीं होता लेकिन पुर्तगाली या अंग्रेज़ी में बहुधा ऐसा होता है। जैसे : Homem साल ओमैं (पुरुष संज्ञा), Ha आ (haver का क्रिया रूप)

ऐसा होने का एक प्रमुख कारण भी है कि देवनागरी लिपि में प्रत्येक अक्षर सिर्फ़ एक ही ध्वनि इंगित करता है जबकि पुर्तगाली, अंग्रेज़ी आदि भाषाओं में एक अक्षर अलग-अलग संदर्भों में अलग-अलग ध्वनि इंगित कर सकता है जैसे ऊपर दिए गए दूसरे उदाहरण में भी दिखाया गया है।

शब्द संरचना

क्रिया

हिंदी में सभी क्रियाओं के अंत में 'ना' अक्षर उपस्थित रहता है लेकिन पुर्तगाली में क्रियाएँ तीन प्रकार की हो सकती हैं। अत: उनका अंत ar, er और ir से होता है। जैसे—

हिंदी	पुर्तगाली
खेलना	jogar जुगार
पीना	beber बबेर
निर्माण करना	construir कोन्सत्रुइर

सहायक-क्रिया

पुर्तगाली, स्पेनी और फ्रांसीसी आदि भाषाओं में दो सहायक क्रियाओं (ser और estar) का प्रयोग होता है। 'ser' का इस्तेमाल स्थायी संदर्भों में होता है और 'estar' का अस्थायी संदर्भों में जबकि हिंदी में सिर्फ़ एक ही सहायक क्रिया 'होना' का प्रयोग होता है। जैसे—

हिंदी	पुर्तगाली			
होना	ser और estar			
मैं जुआऊँ हूँ। - स्थायी संदर्भ	Eu	sou	o	jaão.
	एयू	सो	उ	जुआऊँ
	सर्व. उप.	स. क्रिया	आर्टिकल	व्य. संज्ञा
	मैं	हूँ	-	जुआऊँ
मैं बाज़ार में हूँ। - अस्थायी संदर्भ	Eu	estou	no	ercado.
	एयू	श्तो	नू	मरकादू
	सर्व. उप.	स. क्रिया	पूर्वसर्ग	संज्ञा
	मैं	हूँ	में	बाज़ार

संयुक्त क्रिया

हिंदी में संयुक्त क्रिया का प्रयोग न सिर्फ़ लेखन में बल्कि बोलचाल के स्तर पर भी खूब होता है। हालाँकि इस तरह की घटना पुर्तगाली में नहीं पाई जाती है। जैसे—

वह सुबह-सुबह हमारे घर आ बैठा। (आना+बैठना) (सुब्बाराव 2012:23)

प्रेरणार्थक क्रिया

आमतौर पर जब हिंदी में प्रेरणार्थक क्रिया का प्रयोग होता है तो बस मूल क्रिया शब्द में कुछ शाब्दिक बदलाव होते हैं और नई क्रिया की व्युत्पत्ति होती है लेकिन पुर्तगाली, अंग्रेज़ी आदि भाषाओं में या तो एक बिल्कुल नए क्रिया शब्द का प्रयोग किया जाता है या मूल क्रिया से पहले एक और क्रिया जोड़ दी जाती है जो कि सहायक क्रिया की तरह व्यवहार करती है। जैसे—

हिंदी	पुर्तगाली				
पढ़ना—राम हिंदी पढ़ता है।	estudar—	Ram	estuda	hindi.	
		राम	श्तुदा	हिंदी	
		संज्ञा	क्रिया-रूप	संज्ञा	
		राम	पढ़ता है	हिंदी	
पढ़ाना—	ensinar (नया क्रिया शब्द)				
राम कार्ला को हिंदी पढ़ाता है।	Ram	ensina	hindi	à (a+a)	Carla.
	राम	एनसिना	हिंदी	आ	कार्ला
	संज्ञा	क्रिया-रूप	संज्ञा	पूर्वसर्ग+आर्टिकल	संज्ञा
	राम	पढ़ाता है	हिंदी	को -	कार्ला
	fazer + estudar (मूल क्रिया से पहले एक और क्रिया)				
	Ram	faz	a	Carla estudar	hindi
	राम	फ़ाश	अ	कार्ला श्तुदार	हिंदी
	संज्ञा	क्रिया-रूप	आर्टिकल	संज्ञा श्तुदार	संज्ञा
	राम	प्रेरित करता है	-	काला पढ़ना	हिंदी

क्रिया रूप : लिंग प्रभाव

पुर्तगाली में किसी भी क्रिया रूप में पुलिंग या स्त्रीलिंग का अंतर नहीं होता है पर हिंदी में यह अंतर सूचनात्मक रूप में सदैव उपस्थित होता है। हालाँकि आज्ञार्थक रूप में और वर्तमान संभाव्य रूप में लिंग का प्रभाव क्रिया रूपों पर नहीं पड़ता है। जैसे—

सूचनात्मक रूप (Indicative mood)

हिंदी	पुर्तगाली			
राम क्रिकेट खेलता(खेल-ता) है।	O	Ram	joga (jog-a)	criquete.
	उ	राम	जोगा	क्रिकेत
	आर्टिकल	संज्ञा	क्रिया-रूप	संज्ञा
	–	राम	खेलता है	क्रिकेट
रमा क्रिकेट खेलती (खेल-ती) है।	A	Ramá	joga (jog-a)	criquete.
	अ	रमा	जोगा	क्रिकेत
	आर्टिकल	संज्ञा	क्रिया-रूप	संज्ञा
	–	राम	खेलती है	क्रिकेट

आज्ञार्थक रूप (Imperative mood)

हिंदी	पुर्तगाली				
कृपया आप लोग (पुलिंग, बहुवचन) बाज़ार चलें।	Por Favor.	vocês	vão	ao	mercado.
	पूर फ़ावोर,	भोसेश	भाऊँ	आउ	मरकादू
	क्रि.वि.	सर्व. बहू.	चलना-आज्ञा, औ.	पूर्वसर्ग+आर्टि.	संज्ञा
	कृपया	आप लोग	चलें	–	बाजार
रमा जी, कृपया (स्त्रीलिंग, एकवचन) बाज़ार चलें।	Ramá.	Por favor.	vá	ao	mercado.
	रमा,	पूर फ़ावोर,	भा	आउ	मरकादू
	संज्ञा	क्रि.वि.	चलना-आज्ञा, औ.	पूर्वसर्ग+आर्टि	संज्ञा
	रमाजी	कृपया	चलें	–	बाजार

वर्तमान संभाव्य रूप (Subjunctive mood–present)

हिंदी	पुर्तगाली
शायद आज बारिश (स्त्रीलिंग, एकवचन) हो।	Talvez, hoje chova.
शायद खाना (पुलिंग, एकवचन) ठंडा न हो।	Talvez, a comida não esteja fria

संख्या पर लिंग प्रभाव

हिंदी में गण-संख्याओं पर पुलिंग या स्त्रीलिंग संज्ञाओं का कोई प्रभाव नहीं होता लेकिन पुर्तगाली और स्पेनी भाषाओं में कुछ अंकों पर इनके प्रभाव दिखते हैं। जैसे—

हिंदी	**पुर्तगाली**
एक कलम	Um**a** (f, sl) caneta (f, sl)
एक लड़का	Um (m, sl) rapaz (m, sl)
दो कारें	D**o**is (m, pl) carros (m, pl)
दो औरतें	D**ua**s (f, pl) mulheres (f, pl)

हालाँकि क्रमसूचक संख्याएँ दोनों भाषाओं में विशेषण के समान व्यवहार करती हैं और इनका रूप पुलिंग और स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अनुसार बदलता है। जैसे—

हिंदी	**पुर्तगाली**
पह**ला** साल	primeir**o** an**o**
पह**ली** लड़की	primeir**a** menin**a**
बीस**वीं** सदी	vigésim**o** século
बीस**वाँ** घर	vigésim**a** cas**a**

शब्द-क्रम

हिंदी में आमतौर पर सर्वप्रथम [कर्ता-कर्म (अप्रत्यक्ष - प्रत्यक्ष) - क्रिया रूप] संरचना का प्रयोग किया जाता है हालाँकि कई बार कर्ता और कर्म के स्थान बदले भी जा सकते हैं। पुर्तगाली में सामान्यत: [कर्ता-क्रिया रूप-कर्म (प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष)] संरचना का प्रयोग होता है।

	शब्द-क्रम	**उदाहरण**			
हिंदी	कर्ता-कर्म (अप्रत्यक्ष-प्रत्यक्ष) - क्रिया रूप	आपने (कर्ता)	राम को (अप्रत्यक्ष कर्म)	किताब (प्रत्यक्ष कर्म)	दी थी। (क्रिया रूप)
पुर्तगाली	कर्ता - क्रिया रूप -कर्म (प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष)	Senhor (कर्ता)	tinha dado (क्रिया रूप)	um livro (प्रत्यक्ष कर्म)	ao Ram (e). (अप्रत्यक्ष कर्म)

पूर्वसर्ग

पुर्तगाली, स्पेनी भाषाओं में पूर्वसर्ग हमेशा संज्ञा या क्रिया से पहले आता है जबकि हिंदी में यह हमेशा संज्ञा या क्रिया के बाद आता है। जैसे—

	हिंदी	पुर्तगाली				
संज्ञा	श्याम लिस्बन में रहता है।	O उ आर्टिकल –	Shvám श्याम संज्ञा श्याम	vive भिभ क्रिया–रूप रहता है	em ऐं पूर्वसर्ग में	Lisboa. लिस्बोआ संज्ञा लिस्बन
क्रिया	खाने के लिए क्या बनाया है ?	O que उ क संज्ञा	fez फ़ेश क्रिया–रूप–भूतकाल, एकवचन		para परा पूर्वसर्ग	comer? कूमेर ? क्रिया–रूप–मूल

यहाँ ऊपर दिए गए दूसरे उदाहरण से स्पष्ट है कि पुर्तगाली में भी हिंदी की तरह बिना कर्ता के वाक्य बनाए जा सकते हैं और ये वाक्य व्याकरण की दृष्टि से सही होते हैं।

कुछ खास संदर्भों में हिंदी या दक्षिण एशियाई भाषाओं के वाक्यों में क्रिया, विशेषण, क्रिया–विशेषण और प्रश्नात्मक शब्दों को दोहराया जा सकता है या कुछ शब्दों की प्रतिध्वनि भी प्रयोग की जा सकती है (अब्बी 1992), लेकिन इस तरह की संरचनाएँ पुर्तगाली में नहीं पाई जातीं।

जैसे—वह कहाँ–कहाँ हिंदी पढ़ता है ? (क्रिया–विशेषण)

रीता बहुत धीरे–धीरे बोलती है। (विशेषण)

चलो–चलो, जल्दी–जल्दी खाना बनाओ। (क्रिआ+क्रिया–विशेषण)

शब्दों की प्रतिध्वनि : चाय–वाय, खाना–वाना (सुब्बाराव 2012:26)

सारांश

इस आलेख के माध्यम से पुर्तगाल और भारत के सांस्कृतिक संबंधों के साथ–साथ न सिर्फ़ पुर्तगाल में हिंदी के पठन–पाठन की स्थिति बल्कि पुर्तगाली और हिंदी भाषाओं को एक तुलनात्मक परिदृश्य में दिखाने की कोशिश की गई है। यह आलेख एक शुरुआत मात्र है और तुलनात्मक भाषा–विज्ञान के क्षेत्र में इससे न सिर्फ़ हिंदी और भारतीय भाषाओं के बीच बल्कि विदेशी भाषाओं और हिंदी के बीच जो बहुत सारी भाषाई या सांस्कृतिक अंतर और संरचनाएँ मौजूद हैं उन्हें समझने और उनका विश्लेषण करने में यह लेख सहायक सिद्ध हो सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

गुरु, कामताप्रसाद प. 2009 'हिंदी व्याकरण' प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली

Agnihotri, Rama Kant. 2007. 'Hindi an essential grammar'. Routledge, NY

Abbi, Anvita. 1992. 'Reduplication in South Asian languages'. Allied Publishers, New Delhi

Kachru, Yamuna. 2006. 'Hindi Syntax'. London Oriental and African Language Library, John Benjamins Publishing Company

Mateus, Mira. 2003. 'Gramática da Língua Portuguesa', Caminho, Lisboa.

Subbarao, K.V., 2012. 'South Asian Languages : A Syntactic Topology', Cambridge University Press.

कला संकाय, लिस्बन विश्वविद्यालय
shiv4singh@gmail.com